http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2026) वर्ष 6, अंक 8, 7-13

Article ID:636

भारत में समुद्री उत्पाद निर्यात, मूल्य संवर्धन एवं नियामक ढाँचा: ब्लू इकोनॉमी विकास के अवसर

डॉ. किरण एन. पटेल[1], डॉ. स्वाति एस. शर्मा[2]

[1]सहायक प्राध्यापक ए.एस.पी.ई.ई. एग्रीबिजनेस प्रबंधन संस्थान नवसारी कृषि विश्वविद्यालय, नवसारी – गुजरात

[2]प्रोफेसर ए.एस.पी.ई.ई. एग्रीबिजनेस प्रबंधन संस्थान नवसारी कृषि विश्वविद्यालय, नवसारी – गुजरात

*अनुरूपी लेखक

डॉ. किरण एन. पटेल*

समुद्री उत्पाद क्षेत्र वैश्विक **ब्लू इकोनॉमी (Blue Economy)** का एक महत्त्वपूर्ण एवं रणनीतिक घटक बनकर उभरा है, जो खाद्य एवं पोषण सुरक्षा, रोजगार सृजन, विदेशी मुद्रा अर्जन तथा सतत आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है। समुद्री उत्पादों में समुद्री मत्स्य, क्रस्टेशियन (झींगा, केकड़ा आदि), मोलस्क, सेफालोपोड (स्क्विड एवं कटलफिश), समुद्री शैवाल तथा अन्य जलीय संसाधन शामिल हैं, जिन्हें समुद्री मत्स्याखेट एवं जलीय कृषि (Aquaculture) के माध्यम से प्राप्त किया जाता है। इसके अतिरिक्त जमे हुए (Frozen), डिब्बाबंद (Canned), सूखे (Dried), धूम्र-संरक्षित (Smoked) तथा रेडी-टू-ईट (Ready-to-Eat) समुद्री उत्पादों जैसे अनेक मूल्य संवर्धित (Value Added) उत्पाद भी इस उद्योग का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। प्रोटीन युक्त खाद्य पदार्थों की बढ़ती वैश्विक मांग, अंतरराष्ट्रीय समुद्री खाद्य व्यापार का तीव्र विस्तार, जलीय कृषि में तकनीकी प्रगति तथा प्रसंस्करण एवं शीत-श्रृंखला (Cold Chain) अवसंरचना में सुधार ने समुद्री उत्पाद उद्योग को विश्व अर्थव्यवस्था के सबसे तेजी से विकसित होने वाले क्षेत्रों में शामिल कर दिया है।

लगभग 11,098 किमी लंबी तटरेखा, लगभग 2.02 मिलियन वर्ग किमी का विशेष आर्थिक क्षेत्र (Exclusive Economic Zone-EEZ), विविध समुद्री पारिस्थितिक तंत्र तथा समृद्ध मत्स्य संसाधनों के कारण भारत को समुद्री क्षेत्र में विशिष्ट तुलनात्मक लाभ प्राप्त है। भारत विश्व का दूसरा सबसे बड़ा मत्स्य उत्पादक तथा प्रमुख समुद्री खाद्य निर्यातक देशों में से एक है। समुद्री उत्पादों का निर्यात कृषि निर्यात में महत्वपूर्ण योगदान देने के साथ-साथ लाखों मछुआरों, मत्स्य पालकों, प्रसंस्करण इकाइयों, व्यापारियों एवं निर्यातकों की आजीविका का आधार भी है। भारत के समुद्री निर्यात में फ्रोजन झींगा (Frozen Shrimp) का सर्वाधिक योगदान है, जिसके बाद फ्रोजन मछली, स्क्विड, कटलफिश तथा अन्य मूल्य संवर्धित समुद्री उत्पादों का स्थान आता है। भारत के प्रमुख निर्यात बाजारों में संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन, यूरोपीय संघ, जापान, दक्षिण-पूर्व एशिया तथा मध्य-पूर्व के देश शामिल हैं।

वर्तमान समय में मूल्य संवर्धन, सतत मत्स्य प्रबंधन, समुद्री खाद्य प्रसंस्करण, समुद्री जैव प्रौद्योगिकी, ट्रेसबिलिटी (Traceability) तथा अंतरराष्ट्रीय गुणवत्ता प्रमाणीकरण पर बढ़ते जोर ने वैश्विक समुद्री बाजारों में भारत की प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता को मजबूत करने के नए अवसर प्रदान किए हैं। साथ ही, नियामक संस्थाएँ एवं सरकारी नीतियाँ खाद्य सुरक्षा, पर्यावरणीय संरक्षण, समुद्री संसाधनों के सतत उपयोग तथा अंतरराष्ट्रीय व्यापार मानकों के अनुपालन को सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY), मत्स्य एवं जलीय कृषि अवसंरचना विकास निधि (FIDF) तथा तटीय अवसंरचना

विकास जैसी सरकारी पहलें भारत में ब्लू इकोनॉमी को गति प्रदान कर रही हैं तथा समुद्री उत्पाद क्षेत्र के विकास की संभावनाओं को और अधिक सुदृढ़ बना रही हैं।

समुद्री उत्पाद निर्यात की वर्तमान स्थिति

समुद्री उत्पाद भारत के सबसे महत्वपूर्ण कृषि निर्यात उत्पादों में से एक हैं, जो विदेशी मुद्रा अर्जन, रोजगार सृजन तथा ब्लू इकोनॉमी के विकास में उल्लेखनीय योगदान देते हैं। लगभग 11,000 किमी से अधिक लंबी तटरेखा, 2.02 मिलियन वर्ग किमी का विशेष आर्थिक क्षेत्र (EEZ) तथा समृद्ध समुद्री जैव विविधता के कारण भारत विश्व के प्रमुख समुद्री खाद्य निर्यातक देशों में अपनी विशिष्ट पहचान बना चुका है। देश का समुद्री निर्यात क्षेत्र समुद्री मत्स्याखेट, जलीय कृषि, समुद्री खाद्य प्रसंस्करण, शीत-श्रृंखला लॉजिस्टिक्स तथा मूल्य संवर्धित समुद्री उत्पादों को समाहित करता है, जिससे लाखों मछुआरों, मत्स्य पालकों, प्रसंस्करण इकाइयों एवं निर्यातकों को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रोजगार प्राप्त होता है।

पिछले दो दशकों में भारत के समुद्री उत्पाद निर्यात में निरंतर वृद्धि दर्ज की गई है, जिसका प्रमुख कारण झींगा जलीय कृषि का तीव्र विस्तार, आधुनिक प्रसंस्करण सुविधाओं का विकास, अंतरराष्ट्रीय गुणवत्ता मानकों को अपनाना तथा वैश्विक स्तर पर प्रोटीन युक्त समुद्री खाद्य पदार्थों की बढ़ती मांग है। वित्तीय वर्ष 2024–25 में भारत ने लगभग 17 लाख मीट्रिक टन समुद्री उत्पादों का निर्यात किया, जिसका कुल मूल्य लगभग ₹62,408 करोड़ (US$ 7.45 बिलियन) रहा। वैश्विक बाजार में विभिन्न चुनौतियों एवं अनिश्चितताओं के बावजूद यह उपलब्धि भारतीय समुद्री उत्पाद उद्योग की प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता एवं मजबूती को दर्शाती है।

भारत के समुद्री निर्यात में फ्रोजन झींगा का सर्वाधिक योगदान है, जो कुल निर्यात आय का लगभग दो-तिहाई भाग प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त फ्रोजन मछली, स्क्विड, कटलफिश, सूखे समुद्री उत्पाद तथा विभिन्न मूल्य संवर्धित समुद्री खाद्य पदार्थ भी निर्यात टोकरी में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। वर्तमान में भारत अपने समुद्री उत्पादों का निर्यात 130 से अधिक देशों को करता है, जिनमें संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन, यूरोपीय संघ, जापान, दक्षिण-पूर्व एशिया तथा मध्य-पूर्व प्रमुख बाजार हैं। गुणवत्ता आश्वासन, ट्रेसबिलिटी प्रणाली, सतत मत्स्य प्रबंधन, अंतरराष्ट्रीय प्रमाणन, आधुनिक शीत-श्रृंखला अवसंरचना तथा मूल्य संवर्धन पर बढ़ते निवेश से भविष्य में भारत की वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता और अधिक मजबूत होने की संभावना है। इसके परिणामस्वरूप समुद्री उत्पाद निर्यात न केवल विदेशी मुद्रा अर्जन में वृद्धि करेगा, बल्कि देश की सतत ब्लू इकोनॉमी के विकास को भी नई गति प्रदान करेगा।

निर्यात प्रवृत्तियाँ एवं प्रमुख निर्यात बाजार

भारत विश्व के प्रमुख समुद्री उत्पाद निर्यातक देशों में से एक के रूप में उभरकर सामने आया है। समुद्री खाद्य पदार्थों का निर्यात कृषि निर्यात, विदेशी मुद्रा अर्जन, रोजगार सृजन तथा तटीय क्षेत्रों के आर्थिक विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। लगभग 11,100 किमी लंबी तटरेखा, 2.02 मिलियन वर्ग किमी का विशेष आर्थिक क्षेत्र (Exclusive Economic Zone-EEZ), समृद्ध समुद्री जैव विविधता तथा तीव्र गति से विकसित हो रहे जलीय कृषि (Aquaculture) क्षेत्र के कारण भारत ने वैश्विक समुद्री खाद्य बाजार में अपनी मजबूत पहचान स्थापित की है।

पिछले दो दशकों में भारत के समुद्री उत्पाद निर्यात में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। इस वृद्धि के प्रमुख कारणों में जलीय कृषि में तकनीकी प्रगति, झींगा पालन (Shrimp Farming) का विस्तार, आधुनिक समुद्री खाद्य प्रसंस्करण इकाइयों का विकास, अंतरराष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मानकों का अनुपालन तथा उच्च गुणवत्ता वाले समुद्री खाद्य पदार्थों की बढ़ती वैश्विक मांग शामिल हैं। समय के साथ भारत का निर्यात पोर्टफोलियो केवल पारंपरिक फ्रोजन मछली तक सीमित न रहकर उच्च मूल्य वाले उत्पादों जैसे फ्रोजन झींगा, सेफालोपोड (स्क्विड एवं कटलफिश), रेडी-टू-कुक

तथा अन्य मूल्य संवर्धित समुद्री उत्पादों तक विस्तारित हो गया है।

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (Marine Products Export Development Authority-MPEDA) के अनुसार, वित्तीय वर्ष 2024–25 के दौरान भारत ने लगभग 17 लाख मीट्रिक टन समुद्री उत्पादों का निर्यात किया, जिससे लगभग ₹62,408 करोड़ (US$ 7.45 बिलियन) की विदेशी मुद्रा अर्जित हुई। यद्यपि वैश्विक आर्थिक मंदी, लॉजिस्टिक्स लागत में वृद्धि, मुद्रास्फीति तथा भू-राजनीतिक अनिश्चितताओं के कारण निर्यात की मात्रा में कुछ उतार-चढ़ाव देखने को मिला, फिर भी प्रीमियम गुणवत्ता वाले समुद्री उत्पादों की बढ़ती मांग तथा प्रति इकाई निर्यात मूल्य में सुधार के कारण कुल निर्यात मूल्य अपेक्षाकृत स्थिर बना रहा।

समुद्री उत्पाद निर्यात की संरचना

भारत के समुद्री उत्पाद निर्यात में फ्रोजन झींगा (Frozen Shrimp) का सर्वाधिक योगदान है, जो कुल निर्यात मूल्य का लगभग 66 प्रतिशत प्रदान करता है। यही कारण है कि इसे भारत के समुद्री उत्पाद निर्यात उद्योग की रीढ़ माना जाता है। वर्तमान में भारत विश्व के सबसे बड़े संवर्धित (Farmed) झींगा निर्यातकों में शामिल है। इसके अतिरिक्त रिबन फिश (Ribbonfish), सेफालोपोड, टूना, पॉम्फ्रेट, मैकेरल, सार्डिन तथा सजावटी मछलियाँ (Ornamental Fish) भी प्रमुख निर्यात उत्पादों में शामिल हैं।

भारत के प्रमुख समुद्री निर्यात उत्पाद निम्नलिखित हैं—

- फ्रोजन झींगा (Frozen Shrimp)
- फ्रोजन मछली (Frozen Fish)
- फ्रोजन स्क्विड (Frozen Squid)
- फ्रोजन कटलफिश (Frozen Cuttlefish)
- सूखे समुद्री उत्पाद (Dried Marine Products)
- शीतित समुद्री खाद्य (Chilled Seafood)
- जीवित समुद्री खाद्य (Live Seafood)
- मूल्य संवर्धित समुद्री उत्पाद (Value-added Seafood Products)
- फिश मील एवं फिश ऑयल (Fish Meal and Fish Oil)
- रेडी-टू-कुक तथा रेडी-टू-ईट समुद्री उत्पाद

प्रमुख निर्यात बाजार

भारत के समुद्री उत्पादों का निर्यात 130 से अधिक देशों में किया जाता है, जो भारतीय समुद्री खाद्य उद्योग की वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता को दर्शाता है। समय के साथ भारत के निर्यात बाजारों में उल्लेखनीय विविधता आई है। प्रमुख आयातक क्षेत्र निम्नलिखित हैं

1. संयुक्त राज्य अमेरिका

संयुक्त राज्य अमेरिका भारत के समुद्री उत्पादों का सबसे बड़ा निर्यात बाजार है। यहाँ मुख्य रूप से उच्च गुणवत्ता वाले फ्रोजन झींगा, विशेषकर वानामी (Vannamei) झींगा, तथा विभिन्न मूल्य संवर्धित समुद्री उत्पादों की मांग रहती है। अमेरिकी खाद्य एवं औषधि प्रशासन (USFDA) द्वारा लागू कठोर खाद्य सुरक्षा मानकों ने भारतीय निर्यातकों को उच्च गुणवत्ता, ट्रेसबिलिटी तथा सुरक्षित उत्पादन प्रणाली अपनाने के लिए प्रेरित किया है।

2. चीन

चीन भारत के प्रमुख समुद्री उत्पाद आयातकों में से एक है। यह मुख्यतः फ्रोजन मछली, रिबन फिश, सेफालोपोड तथा आगे प्रसंस्करण (Further Processing) हेतु कच्चे समुद्री उत्पादों का आयात करता है। चीन में समुद्री खाद्य पदार्थों की बढ़ती खपत तथा प्रसंस्करण उद्योगों के विस्तार के कारण भारत से आयात में निरंतर वृद्धि हुई है।

3. यूरोपीय संघ

यूरोपीय संघ एक उच्च मूल्य वाला समुद्री खाद्य बाजार है, जहाँ स्वच्छता (Sanitary) एवं पादप स्वच्छता (Phytosanitary) संबंधी अत्यंत कठोर मानकों का पालन अनिवार्य है। स्पेन, इटली, बेल्जियम, जर्मनी, फ्रांस तथा नीदरलैंड्स इसके प्रमुख आयातक देश हैं। यूरोपीय संघ को निर्यात करने वाले भारतीय निर्यातकों के लिए HACCP, अवशेष निगरानी (Residue Monitoring),

ट्रेसबिलिटी तथा सतत उत्पादन (Sustainability) संबंधी मानकों का पालन आवश्यक है।

4. जापान

जापान उच्च गुणवत्ता वाले समुद्री उत्पादों का एक महत्वपूर्ण बाजार है। यहाँ मुख्यतः झींगा, स्क्विड, कटलफिश, टूना तथा ऑक्टोपस का आयात किया जाता है। जापानी बाजार में प्रवेश के लिए उत्पाद की गुणवत्ता, ताजगी, आकर्षक पैकेजिंग तथा खाद्य सुरक्षा मानकों का पालन अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

5. दक्षिण-पूर्व एशिया

वियतनाम, थाईलैंड, मलेशिया, सिंगापुर, इंडोनेशिया तथा फिलीपींस जैसे देश भारत से कच्चे समुद्री उत्पादों के साथ-साथ तैयार एवं मूल्य संवर्धित समुद्री खाद्य उत्पादों का भी आयात करते हैं। विशेष रूप से वियतनाम भारतीय समुद्री उत्पादों के पुनः प्रसंस्करण (Reprocessing) का एक महत्वपूर्ण वैश्विक केंद्र बनकर उभरा है।

6. मध्य-पूर्व

संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरब, ओमान, कुवैत, बहरीन तथा कतर सहित खाड़ी देशों में भारतीय समुद्री उत्पादों की मांग लगातार बढ़ रही है। प्रवासी भारतीयों की बड़ी आबादी, बढ़ती आय तथा समुद्री खाद्य पदार्थों की बढ़ती खपत इस क्षेत्र में निर्यात वृद्धि के प्रमुख कारण हैं।

राज्यवार निर्यात प्रदर्शन

भारत के समुद्री उत्पादों का अधिकांश निर्यात कुछ प्रमुख तटीय राज्यों से होता है, जहाँ आधुनिक मत्स्य अवसंरचना, विकसित जलीय कृषि, समुद्री खाद्य प्रसंस्करण इकाइयाँ तथा निर्यातोन्मुख उद्योग स्थापित हैं।

समुद्री उत्पाद निर्यात में अग्रणी राज्य निम्नलिखित हैं—

- आंध्र प्रदेश
- गुजरात
- केरल
- तमिलनाडु
- पश्चिम बंगाल
- ओडिशा

इन राज्यों में आंध्र प्रदेश व्यापक जलीय कृषि एवं झींगा उत्पादन के कारण देश का सबसे बड़ा झींगा निर्यातक राज्य है। वहीं गुजरात समुद्री मत्स्याखेट (Capture Fisheries), सेफालोपोड, रिबन फिश तथा सूखी मछलियों के निर्यात में महत्वपूर्ण योगदान देता है। इसके अतिरिक्त केरल, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल एवं ओडिशा भी समुद्री उत्पादों के उत्पादन, प्रसंस्करण तथा निर्यात के माध्यम से भारत के समुद्री निर्यात क्षेत्र को सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

समुद्री जैव प्रौद्योगिकी के अवसर (Marine Biotechnology Opportunities)

सतत (Sustainable) समुद्री खाद्य उत्पादन, ईको-लेबल (Eco-labels), कार्बन-न्यूट्रल उत्पादन प्रणालियों तथा ट्रेसबिलिटी (Traceability) आधारित प्रमाणीकरण की बढ़ती वैश्विक मांग भारतीय समुद्री उत्पाद निर्यातकों के लिए विकसित देशों के बाजारों में प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता बढ़ाने के नए अवसर प्रदान कर रही है। भारत की समृद्ध समुद्री जैव विविधता उच्च मूल्य वाले जैव-उत्पादों (Bioproducts) के विकास की अपार संभावनाएँ रखती है।

समुद्री जैव प्रौद्योगिकी के प्रमुख अवसर निम्नलिखित हैं—

- समृद्ध समुद्री जैव विविधता के आधार पर उच्च मूल्य वाले जैव-उत्पादों का विकास।
- समुद्री जीवों से प्राप्त जैव-सक्रिय यौगिकों (Bioactive Compounds) का औषधि (Pharmaceuticals), न्यूट्रास्यूटिकल्स (Nutraceuticals) तथा कॉस्मेटिक्स उद्योग में उपयोग।
- ओमेगा-3 फैटी एसिड, समुद्री कोलेजन (Marine Collagen), फिश प्रोटीन हाइड्रोलाइसेट तथा जैव-सक्रिय पेप्टाइड्स की बढ़ती वैश्विक मांग।
- समुद्री शैवाल (Seaweed) एवं माइक्रोएल्गी (Microalgae) की बड़े पैमाने पर खेती, जिनका उपयोग खाद्य पदार्थों, जैव ईंधन

(Biofuels), जैव उर्वरकों, पशु आहार तथा बायोप्लास्टिक निर्माण में किया जा सकता है।
- जैव प्रौद्योगिकी एवं आनुवंशिक सुधार (Genetic Improvement) के माध्यम से रोग-प्रतिरोधी मछलियों एवं झींगा प्रजातियों का विकास।
- सतत जलीय कृषि के लिए प्रोबायोटिक्स, टीकों (Vaccines) एवं आणविक निदान (Molecular Diagnostics) का उपयोग।
- समुद्री स्रोतों से एंजाइम, प्राकृतिक रंगद्रव्य (Pigments), एंटीबायोटिक्स एवं औद्योगिक रसायनों के विकास की व्यापक संभावनाएँ।
- अनुसंधान, नवाचार तथा सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP) के माध्यम से समुद्री जैव प्रौद्योगिकी आधारित स्टार्टअप्स को प्रोत्साहन।
- ब्लू इकोनॉमी के अंतर्गत निर्यातोन्मुख एवं मूल्य संवर्धित समुद्री उत्पादों के विकास की व्यापक संभावनाएँ।

समुद्री उद्योग को नियंत्रित करने वाले प्रमुख अधिनियम एवं नियम (Regulations and Acts Governing the Marine Industry)

भारत में समुद्री मत्स्य एवं समुद्री उत्पाद उद्योग के सतत विकास, पर्यावरण संरक्षण, खाद्य सुरक्षा तथा निर्यात गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न कानून एवं नियम लागू किए गए हैं।

प्रमुख अधिनियम एवं नियम निम्नलिखित हैं—

- **भारतीय मत्स्य अधिनियम, 1897 (Indian Fisheries Act, 1897)** – विषैले पदार्थों एवं विस्फोटकों के प्रयोग जैसी विनाशकारी मत्स्याखेट गतिविधियों को रोकता है।
- **पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 (Environment Protection Act, 1986)** – समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र एवं तटीय पर्यावरण की सुरक्षा सुनिश्चित करता है।
- **जल (प्रदूषण निवारण एवं नियंत्रण) अधिनियम, 1974 (Water Act, 1974)** – मत्स्य संसाधनों को प्रभावित करने वाले जल प्रदूषण को नियंत्रित करता है।
- **वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 (Wild Life Protection Act, 1972)** – संकटग्रस्त समुद्री जीवों एवं समुद्री जैव विविधता का संरक्षण करता है।
- **तटीय जलीय कृषि प्राधिकरण अधिनियम, 2005 (Coastal Aquaculture Authority Act, 2005)** – पर्यावरण-अनुकूल एवं सतत तटीय जलीय कृषि का विनियमन करता है।
- **समुद्री मत्स्य विनियमन अधिनियम (Marine Fishing Regulation Acts-MFRAs)** – विभिन्न राज्यों द्वारा मत्स्य क्षेत्र, लाइसेंसिंग, बंद मौसम (Fishing Ban) तथा जाल के आकार (Mesh Size) का नियमन।
- **खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम, 2006 (Food Safety and Standards Act, 2006)** – समुद्री खाद्य प्रसंस्करण में खाद्य सुरक्षा एवं स्वच्छता सुनिश्चित करता है।
- निर्यात के लिए **HACCP**, **SPS (Sanitary and Phytosanitary Measures)**, **ट्रेसबिलिटी** तथा **अवशेष निगरानी (Residue Monitoring)** जैसे अंतरराष्ट्रीय मानकों का पालन आवश्यक है।
- ये सभी नियम सतत मत्स्य प्रबंधन, पर्यावरण संरक्षण, उपभोक्ता सुरक्षा एवं निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ावा देते हैं।

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (Marine Products Export Development Authority – MPEDA)

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (MPEDA) की स्थापना वर्ष 1972 में भारत सरकार के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के अंतर्गत की गई थी। इसका मुख्यालय कोच्चि (केरल) में स्थित है। MPEDA भारत से समुद्री उत्पादों के निर्यात को बढ़ावा देने वाली प्रमुख संस्था है।

MPEDA के प्रमुख कार्य—

- समुद्री उत्पादों के निर्यात को प्रोत्साहित करना।
- वित्तीय सहायता एवं तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान करना।

- निर्यातकों को बाजार संबंधी सूचनाएँ एवं व्यापारिक जानकारी उपलब्ध कराना।
- समुद्री खाद्य प्रसंस्करण, जलीय कृषि, शीत-श्रृंखला अवसंरचना एवं निर्यात संवर्धन को बढ़ावा देना।
- अंतरराष्ट्रीय समुद्री खाद्य प्रदर्शनी (Seafood Fairs) एवं क्रेता-विक्रेता सम्मेलन (Buyer-Seller Meets) आयोजित करना।
- गुणवत्ता मानकों एवं ट्रेसबिलिटी प्रणाली को अपनाने में सहायता प्रदान करना।

समुद्री उत्पाद प्रमाणीकरण (Marine Certification)

समुद्री उत्पादों का प्रमाणीकरण खाद्य सुरक्षा, गुणवत्ता, सतत उत्पादन तथा ट्रेसबिलिटी सुनिश्चित करने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

प्रमुख अंतरराष्ट्रीय प्रमाणन—

- HACCP (Hazard Analysis and Critical Control Points)
- ISO 22000
- BRCGS (Brand Reputation through Compliance Global Standards)
- Best Aquaculture Practices (BAP)
- Aquaculture Stewardship Council (ASC)
- Marine Stewardship Council (MSC)

इन प्रमाणनों से वैश्विक बाजारों में उत्पादों की स्वीकार्यता बढ़ती है, उपभोक्ताओं का विश्वास मजबूत होता है तथा निर्यातकों को प्रीमियम मूल्य प्राप्त करने में सहायता मिलती है।

भारत की ब्लू इकोनॉमी के अंतर्गत अवसर (Opportunities under India's Blue Economy)

भारत की ब्लू इकोनॉमी समुद्री संसाधनों के सतत उपयोग के माध्यम से आर्थिक विकास एवं रोजगार सृजन की व्यापक संभावनाएँ प्रदान करती है।

प्रमुख अवसर निम्नलिखित हैं—

- सतत समुद्री मत्स्य पालन एवं जलीय कृषि का विस्तार।
- गहरे समुद्र में मत्स्याखेट (Deep Sea Fishing) एवं समुद्री कृषि (Mariculture) का विकास।
- समुद्री शैवाल उत्पादन एवं समुद्री जैव प्रौद्योगिकी को बढ़ावा।
- मूल्य संवर्धित समुद्री खाद्य प्रसंस्करण एवं निर्यात का विस्तार।
- स्वास्थ्यवर्धक समुद्री खाद्य पदार्थों की घरेलू एवं वैश्विक मांग में वृद्धि।
- सी-फूड पार्क, शीत-श्रृंखला लॉजिस्टिक्स एवं निर्यात अवसंरचना का विकास।
- कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), ब्लॉकचेन, उपग्रह आधारित मत्स्य पूर्वानुमान तथा ट्रेसबिलिटी प्रणालियों का उपयोग।
- तटीय समुदायों, महिलाओं एवं युवाओं के लिए रोजगार सृजन।
- ईको-पर्यटन, सजावटी मत्स्य पालन एवं समुद्री आधारित उद्यमों को प्रोत्साहन।
- प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY), मत्स्य एवं जलीय कृषि अवसंरचना विकास निधि (FIDF) तथा अन्य ब्लू इकोनॉमी पहलों के माध्यम से सरकारी सहयोग।

समुद्री उत्पाद निर्यात को प्रभावित करने वाली चुनौतियाँ

तेजी से विकास के बावजूद भारत का समुद्री उत्पाद निर्यात क्षेत्र अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है

- निर्यात का अत्यधिक निर्भर होना सीमित उत्पादों, विशेषकर झींगा, पर।
- कुछ ही प्रमुख आयातक देशों पर अधिक निर्भरता।
- स्वच्छता एवं पादप स्वच्छता (SPS) मानकों में लगातार परिवर्तन।
- एंटीबायोटिक एवं रासायनिक अवशेषों से संबंधित अनुपालन संबंधी समस्याएँ।
- जलवायु परिवर्तन एवं समुद्री मत्स्य संसाधनों में कमी।
- झींगा पालन में रोगों का प्रकोप।
- उच्च परिवहन एवं लॉजिस्टिक्स लागत।

- कुछ तटीय क्षेत्रों में अपर्याप्त शीत-श्रृंखला अवसंरचना।
- प्रतिस्पर्धी देशों की तुलना में सीमित मूल्य संवर्धन।
- इक्वाडोर, वियतनाम, इंडोनेशिया, थाईलैंड एवं चीन से बढ़ती प्रतिस्पर्धा।

भविष्य की संभावनाएँ

भारत का समुद्री उत्पाद निर्यात उद्योग देश की ब्लू इकोनॉमी का एक मजबूत स्तंभ बनने की अपार क्षमता रखता है। सतत जलीय कृषि, मूल्य संवर्धित समुद्री खाद्य प्रसंस्करण, शीत-श्रृंखला लॉजिस्टिक्स, ट्रेसबिलिटी प्रणाली, समुद्री जैव प्रौद्योगिकी तथा डिजिटल विपणन में अधिक निवेश से भारत की वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि हो सकती है।

अफ्रीका, लैटिन अमेरिका, मध्य एशिया एवं पूर्वी यूरोप जैसे उभरते बाजारों में निर्यात का विस्तार, नवीन उत्पाद विकास तथा प्रभावी ब्रांडिंग भारत की वैश्विक स्थिति को और अधिक सुदृढ़ बनाएगी। प्रभावी सरकारी नीतियाँ, आधुनिक अवसंरचना, समुद्री संसाधनों का सतत प्रबंधन तथा अंतरराष्ट्रीय गुणवत्ता मानकों का पालन भारत को समुद्री उत्पाद निर्यात में दीर्घकालिक एवं समावेशी विकास प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। इससे रोजगार सृजन, तटीय क्षेत्रों का विकास, विदेशी मुद्रा अर्जन तथा सतत ब्लू इकोनॉमी को नई गति मिलेगी।

निष्कर्ष

भारत का समुद्री उत्पाद क्षेत्र देश की अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण आधार है, जो निर्यात, रोजगार, खाद्य एवं पोषण सुरक्षा तथा विदेशी मुद्रा अर्जन में उल्लेखनीय योगदान देता है। समृद्ध समुद्री संसाधन, तेजी से विकसित होती जलीय कृषि, मूल्य संवर्धन की बढ़ती संभावनाएँ तथा सरकार की सशक्त नीतिगत सहायता इस क्षेत्र को सतत विकास की दिशा में अग्रसर कर रही हैं। आधुनिक प्रौद्योगिकी, अवसंरचना विकास, गुणवत्ता प्रमाणीकरण, अनुसंधान एवं नवाचार तथा समुद्री संसाधनों के वैज्ञानिक एवं सतत प्रबंधन में निरंतर निवेश से भारत की वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता और अधिक मजबूत होगी। भविष्य में समुद्री उत्पाद उद्योग न केवल ब्लू इकोनॉमी का प्रमुख आधार बनेगा, बल्कि समावेशी, पर्यावरण-अनुकूल एवं सतत आर्थिक विकास का भी एक महत्वपूर्ण प्रेरक सिद्ध होगा।